Mr.Sanjay Kumar
(Assistant Professor)
Dept.Of Psychology
C.M.J. College, Donwarihat
Khutauna,Madhubani
9905430675(Mobile/WhatsApp)
Email- sanjayuttam725@gmail.com

B.A. PART -II. PAPER-III

असामान्य व्यवहार के उपागम या मॉडल-मनोगतिक उपागम (approaches or models of abnormal behaviour- psychodynamic approach)

असामान्य व्यवहार के लक्षण, कारण तथा उपचार के अंतर्गत विभिन्न मानसिक विकृतियों या असामान्य व्यवहारों के विभिन्न कारण हो सकते हैं ।जैसे- चिंता विकृति कभी प्रतिबल /तनाव के कारण विकसित होती है तो कभी दोषपूर्ण संज्ञान से तो कभी जीव-रसायनिक समस्याओं से। असामान्य व्यवहार के इन्हीं लक्षणों एवं कारणों को जानने समझने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के द्वारा भिन्न-भिन्न विचार या सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं जो विभिन्न उपागमों या मॉडलों के रूप में व्यवहृत किए गए हैं। इन्हीं उपागमों में से मनोगतिक उपागम या मॉडल प्रमुख उपागम है।

मनोगतिक उपागम या मॉडल(psychodynamic approach or mode)-मनोतिक उपागम के अनुसार असामान्य व्यवहार का कारण प्रतिबल एवं चिंता है प्रतिबल की उत्पत्ति में दो प्रकार के सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं पहला मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत(**सिगमंड फ्रायड** द्वारा) तथा दूसरा नव-फ्रायडवादी सिद्धांत(**अन्ना फ्रायड, करेन हार्नी, सुलीवान, ऑटो रैंक ,एरिक फ्रॉम, इत्यादि** द्वारा)।

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत(psychoanalytic theory)- मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत का विकास सिगमंड फ्रायड के द्वारा लगभग 1900 ई० में हुआ इस सिद्धांत के अनुसार प्रतिबल तथा असामान्य व्यवहार के विकास में यौन आवश्यकता, भूख आवश्यकता, आदि जैविक आवश्यकताओं से उत्पन्न द्वंद का हाथ होता है। व्यक्ति क्या करना चाहता है और समाज उसे क्या करने के लिए बाध्य करता है। इन दोनों मांगों के बीच उत्पन्न मानसिक संघर्ष प्रतिबल/तनाव को उत्पन्न करता है और यही प्रतिबल असामान्य व्यवहार का कारण बनता है।फ्रायड के मनोविश्लेषणत्मक सिद्धांत के अंतर्गत उनके द्वारा प्रतिपादित विभिन्न पक्षों का उल्लेख किया गया है-

मन के गत्यात्मक पक्ष-(Dynamic aspect of mind)- फ्रायड ने मन के तीन गत्यात्मक पक्षों का उल्लेख किया, जिन्हें ईड,ईगो तथा सुपर ईगो कहते हैं। इन्हें व्यक्तित्व की गत्यात्मक संरचनाएं या मन का गत्यात्मक पहलू कहते हैं। ईड, ईगो तथा सुपर ईगो क्रमशः सुख के नियम, वास्तविकता नियम तथा नैतिकता नियम पर आधारित होते हैं। ईड अपने जायज-नाजायज आवश्यकताओं की संतुष्टि तुरंत चाहता है, सुपर ईगो सामाजिकता-नैतिकता के तहत इस पर अविलंब रोक लगाता है और ईगो परिस्थिति के अनुकूल होने तक इसकी प्रतीक्षा करता है और दोनों में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।ईड, सुपर ईगो तथा ईगो के स्वरूप में विषमता होने के कारण उनके बीच घटित अंतः क्रिया के परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार के असामान्य व्यवहार विकसित होते हैं।

मन के स्थलाकृतिक पक्ष(topographical aspects of mind)- इस पक्ष के अंतर्गत फ्राइड ने चेतन, अर्धचेतन तथा अचेतन के रूप का वर्णन किया। जिसे मन का आकारात्मक पक्ष भी कहते हैं।चेतन मन का वह भाग है जिसके द्वारा व्यक्ति वर्तमान में अपनी सारी क्रियाएं संपादित करता है।अर्धचेतन वह भाग है जिस में उपस्थित सूचनाओं की चेतना वर्तमान में नहीं होती है किंतु सरल प्रयास से उनकी चेतना हो जाती है।अचेतन वह भाग है जिसके घटकों अर्थात इच्छाओं की चेतना न तो वर्तमान में रहती है ना सहज प्रयास से उनकी चेतना हो

पाती है, बल्कि कुछ विशेष मनोवैज्ञानिक प्रविधियों से उनकी चेतना हो पाती है।अचेतन में ईड की सभी अतृप्त इच्छाएं या आवश्यकताएं स्मृतियों के रूप में दमित होती हैं ।फ्राइड के अनुसार असामान्य व्यवहार का मुख्य कारण अचेतन में दमित ईड की इच्छाएं होती है।

मनोलैंगिक विकास(psychosexual development)- फ्राइड ने मनोलैंगिक विकास के अंतर्गत 5 अवस्थाओं का उल्लेख किया है जिन्हें मौखिक अवस्था(oral stage), गुदा अवस्था(anal stage),यौन प्रधान अवस्था(phallic stage),अव्यक्त अवस्था(latency stage) तथा जननेंद्रिय अवस्था(general stage) कहते हैं। इन अवस्थाओं की अवधि क्रमशः जन्म से 2 वर्ष तक, 2 से 3 साल तक, 3 से 6 साल तक, 6 से 12 साल तक तथा 13 वर्ष से आगे तक होती है।प्रत्येक अवस्था में बालक की जैविक आवश्यकता तथा भौतिक वातावरण के बीच विरोध होने के कारण उत्पन्न संघर्षों या द्वन्दों के समाधान की विफलता की स्थिति में विभिन्न प्रकार के असामान्य व्यवहार यथासमय विकसित हो जाते हैं।

चिंता तथा प्रतिरक्षा-क्रियातंत्र (anxiety and defence mechanism)- कुछ विशेष परिस्थितियों में व्यक्ति अपनी चिंता को दूर करने के लिए प्रतिरक्षा-क्रियातंत्रों का उपयोग चेतन या अचेतन रूप से करता है ।इन क्रियातंत्रों के उपयोग के परिणाम स्वरूप व्यक्ति में असामान्य व्यवहार विकसित हो जाता है।इस व्यवहार का अनुक्रम इस प्रकार है- द्वंद->प्रतिबल->चिंता->प्रतिरक्षा क्रियातंत्र->लक्षण। जैसे- एक शिक्षक कॉलेज नहीं जाना चाहता है क्योंकि उसे 'कोरोना' होने का डर है । लेकिन कॉलेज जाना उसकी बाध्यता है ,अन्यथा कार्रवाई होने का डर है ।ऐसी स्थिति में वह द्वंद का शिकार हो जाता है। द्वंद से प्रतिबल/तनाव उत्पन्न होता है और प्रतिबल के कारण तीव्र चिंता में पड़ जाता है जिससे उसे बुखार हो जाता है ।ऐसी स्थिति में उसे कॉलेज नहीं जाने का एक उचित कारण मिल जाता है और उसकी चिंता समाप्त हो जाती है। इस मनोरचना या क्रियातंत्र को 'रूपांतरण' कहते हैं ।फ्रायड ने कई मनोरचनाओं या प्रतिरक्षा-क्रियातंत्रों की चर्चा की है, जिनमें मुख्य हैं- दमन, उदात्तीकरण, युक्ताभ्यास, प्रतिगमन, प्रतिक्रिया निर्माण, आत्मीकरण, क्षतिपूर्ति, विस्थापितकरण, इत्यादि।

फ्रायड ने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के अंतर्गत असामान्य व्यवहार की व्याख्या मूलतः जैविक आवश्यकताओं(विशेषकर लैंगिक इच्छा) की संतुष्टि से संबंधित उत्पन्न संघर्ष या द्वन्दों के आलोक में करने का प्रयास किया है।

नव-फ्रायडवादी सिद्धांत-- फ्रायड ने असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति के लिए जिम्मेदार जैविक आवश्यकता (विशेषकर लैंगिक इच्छा) की संतुष्टि से संबंधित उत्पन्न संघर्ष और द्वंदों के आलोक में करने का प्रयास किया। जिसका विरोध उनके कुछ समर्थकों ने किया और बताया कि प्रतिबल तथा असामान्य व्यवहार के विकास में जैविक आवश्यकताओं की अपेक्षा व्यक्तिगत समस्याओं तथा हीनता के भाव अथवा अंतर्वैयक्तिक द्वंद का हाथ होता है। इन वैचारिक विरोधियों को नवफ्रायडवादी कहा गया।नवफ्रायडवादी सिद्धांत के समर्थकों में अन्ना फ्राइड, करेन हार्नी ,सूलीवान ऑटो रैंक, एरिक फ्रॉम, इत्यादि का नाम प्रमुख है । इन मनोवैज्ञानिकों ने असामान्य व्यवहार के विकास में ईड की अपेक्षा ईगो को अधिक जिम्मेदार माना।उन्होंने प्रतिबल तथा चिंता का वास्तविक आधार सामाजिक , सांस्कृतिक एवं आर्थिक समस्याओं से उत्पन्न द्वंद को माना।

स्पष्टत: असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति के कारणों, लक्षणों एवं उसके नैदानिक उपचार में मनोगतिक उपागम की उल्लेखनीय भूमिका है। फ्राइड द्वारा प्रतिपादित मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत एवं नवफ्राइडवादियों के विचार आज भी मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र में काफी प्रासंगिक है।

20/05/2020 - Sanjay Kumar